

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ

लीलावती पटेल

हिन्दी विभाग, शास. मदन लाल शुक्ल कॉलेज सीपत, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

मुंशी प्रेमचंद हिंदी कथा-साहित्य के ऐसे महान् रचनाकार हैं जिन्होंने कहानी को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि उसे समाजिक जन-चेतना का संवाहक के रूप में उभारा है। उनकी कहानियाँ उन लोगों की आवाज हैं, जिनकी पीड़ा अक्सर साहित्य और समाज दोनों के द्वारा अनदेखी रह जाती थी। प्रेमचंद के लेखन का मूल स्वभाव यथार्थवादी है वे जीवन की कड़वी सच्चाई— गरीबी, जातिवाद, और असंख्य समाज की असमानताओं को पूरी निष्ठा के साथ प्रभावी ढंग से सामने रखते हैं। उनकी कहानियाँ गोदान, कफन, ठाकुरों का कुआँ, निर्मला व अन्य में किसान, मजदूर, स्त्रियाँ, दलित, निम्नवर्ग, ग्रामीण समाज और शोषित वर्ग, भाहरी जीवन की कठिनाई व विभीषिका को उकेरता है। हर-एक कहानी के अन्दर न जाने कितनी जीवन के परिदृश्य दिखाई देते हैं। यह शोध-पत्र प्रेमचंद की कहानियों में मौजूद सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण करता है और यह दिखाने का प्रयास करता है कि उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष को दिखाती हैं क्योंकि उनके द्वारा उठाए मुद्दे आज भी समाज में प्रासंगिक हैं।

मूल शब्द: आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, वर्गहीन समाज, जातिवाद समग्रता, समाज सुधार

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद को यथार्थवाद के सबसे सशक्त कथाकार व प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने अपने समय के समाज को बाहर से ही नहीं, भीतर से भी देखा था। यही कारण है कि उनकी कहानियों में जो जीवन है, वह किसी कल्पित आदर्श लोक का नहीं, बल्कि धूल, पसीने, भूख, अपमान, संघर्ष और विवशताओं से भरे वास्तविक भारत का जीवन है। प्रेमचंद ने उस समय लेखन किया जब भारतीय समाज औपनिवेशिक शासन, जमींदारी व्यवस्था, जातिगत ऊँच-नीच, स्त्री-पराधीनता और आर्थिक असमानता से जूझ रहा था। उन्होंने इन समस्याओं को छिपाया नहीं, बल्कि कहानी के केंद्र में रखा। उनकी कहानियाँ केवल घटना-प्रधान नहीं हैं, वे सामाजिक चेतना की कहानियाँ हैं, जो पाठक को सोचने पर मजबूर करती हैं। उनका साहित्य यह सिखाता है कि साहित्य का काम केवल सौंदर्य पैदा करना नहीं है, बल्कि मनुष्य के पक्ष में खड़ा होना भी है। इसीलिए प्रेमचंद की कहानियाँ आज भी उतनी ही जीवंत लगती हैं जितनी अपने रचनाकाल में थीं। हममें से कोई ऐसा नहीं होगा जिसने दो बैलों की कथा नहीं सुनी हो जो हमारे अन्तर्मन को आनंदित करने के साथ ही करुणा, दया, पशुओं के प्रति सहिष्णुता, स्वतंत्र प्रेम, मित्रता, वफादारी और मानव जीवन के आदर्श गुणों के प्रतीक को दिखाती हैं बैलों के माध्यम से यह संदेश देती हैं कि आत्मीयता व प्रेम केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं है।

प्रेमचंद हिन्दी एवं उर्दू साहित्य के युगप्रवर्तक साहित्यकार माने जाते हैं उनका वास्तविक नाम धनपतराय श्रीवास्तव था उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को लमही ग्राम उ.प्र. में हुआ था पिता श्री मुंशी अजयाब लाल तथा माता का नाम आनंदी देवी था। उनका बचपन आर्थिक अभावों में व्यतीत हुआ। शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् उन्होंने अध्यापन कार्य आरंभ किया और बाद में विद्यालय निरीक्षक का पदभार संभाला। वे महात्मा गांधी जी के विचारों से प्रभावित थे जिससे प्रेरित होकर वे सरकारी नौकरी का त्याग कर साहित्य सरिता से पूर्णरूपेण जुड़ गए। प्रारंभ में वे लेखन कार्य नवाबराय उपनाम से करते थे। साहित्य – सेवा करते हुए 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया। वे बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध के लेखक थे। साहित्यकारों व विचारकों के द्वारा उन्हें “उपन्यास सम्राट” की उपाधि मिली थी। भारतीय संस्कृति के प्रसंग में उन्होंने प्रसाद को एक पत्र लिखा था कि – “ किस बात पर गर्व करें, वर्णाश्रम धर्म पर! जिसने हमारी जड़ खोद

डाली” प्रेमचंद हिंदी साहित्य के सर्वाधिक विपुल रचनाकारों में से एक हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, अनुवाद तथा बाल-साहित्य जैसी अनेक विधाओं में लेखन कार्य किया। प्रेमचंद ने लगभग 15 प्रमुख उपन्यास लिखे। इनमें प्रमुख उपन्यास सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र अन्तिम व अपूर्ण उपन्यास है, जिसको उनके पुत्र अमृतराय ने पूर्ण किया। कहानियों की बात करें तो प्रेमचंद ने लगभग 300 से अधिक कहानियाँ लिखीं। उनकी कहानियाँ बाद में मानसरोवर नाम से आठ खंडों में प्रकाशित हुई हैं। कुछ कहानियों के नाम हैं— कफन, ईदगाह, पूस की रात, नमक का दरोगा, ठाकुर का कुआँ, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा, बड़े घर की बेटी, पंच परमेश्वर, सद्गति, भातरंज के खिलाड़ी, मंत्र दुध का दाम, सवा सेर गेहूँ, कजाकी, मुक्ति मार्ग, नशा, विध्वंस, घासवाली, अलग्गोझा, माँ, स्वामिनी, बलिदान, गुल्ली-डंडा, बेटों वाली विधवा, आत्माराम, जुलूस, समर यात्रा, इस्तीफा, परीक्षा, हार की जीत, वेश्या, लॉटरी, मैकू, भांखनाद आदि हैं। प्रेमचंद ने मुख्यतः³ नाटक लिखे – संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी। प्रेमचंद ने कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद भी किया। इनमें प्रमुख हैं— सुखदास, अहंकार, टॉलस्टॉय की कहानियाँ। इसके अलावा इन्होंने अन्य क्षेत्रों में भी अपनी लेखनी चलायी जैसे— अनेक निबंध, पुस्तक समीक्षाएँ, संपादकीय लेख, बाल साहित्य, सामाजिक एवं साहित्यिक लेख, रचनात्मक उपलब्धि, हिंदी कथा साहित्य को यथार्थवादी दिशा प्रदान करने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

प्रेमचंद का यथार्थवाद

प्रेमचंद का यथार्थवाद साधारण यथार्थवाद नहीं है। वह केवल बाहरी घटनाओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि समाज की भीतरी संरचना को भी खोलता है। उनकी कहानियों में जीवन की कठोरता है, लेकिन उसी के साथ करुणा भी है। वे मनुष्य को उसकी कमजोरियों के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्र आदर्शवादी नहीं, बल्कि जीवंत और संघर्षशील हैं। यही कारण है कि उनके यहाँ गरीब किसान, मजदूर स्त्री, शोषित दलित, भ्रष्ट अधिकारी या छोटे-छोटे स्वार्थी में उलझा सामान्य इंसान, सब वास्तविक लगते हैं। ‘ठाकुर का कुआँ’, ‘सद्गति’ आदि कहानियों में, ‘कर्मभूमि’ व गोदान उपन्यासों में दलितों के जीवन पर लिखी

गयी रचना थी जबकि उस समय दलित साहित्य न के बराबर थी प्रेमचंद का यथार्थ निराशा पैदा नहीं करता, बल्कि समाज को देखने की नई दृष्टि देता है। वे समस्या दिखाकर रुकते नहीं, बल्कि समस्या की जड़ों तक पहुँचते हैं। उनके यहाँ यथार्थ और संवेदना एक साथ चलते हैं।

ग्रामीण जीवन का चित्रण –

प्रेमचंद की कहानियों का सबसे मजबूत पक्ष ग्रामीण जीवन का चित्रण है। उन्होंने गाँव को केवल प्रकृति का रमणीय क्षेत्र नहीं, बल्कि वर्ग-संघर्ष, गरीबी, शोषण और सामाजिक असमानता का केंद्र माना। उनकी कहानियों में किसान केवल खेत जोतने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह भारतीय व्यवस्था की सबसे पीड़ित इकाई है। जमींदार, महाजन, साहूकार और हुक्मरान उसके जीवन पर लगातार दबाव बनाए रखते हैं। “पूस की रात” में हल्कू जैसे किसान का जीवन ठंड, भूख और बेबसी के बीच झूलता है। खेत की रखवाली करते हुए उसका अपनी स्थिति से हार जाना, ग्रामीण भारत की हकीकत को सामने लाता है। कहानी में भारतीय कृषक की लाचारी, खेत बचाने की मजबूरी और जान बचाने के बीच की द्वन्द्व को प्रदर्शित करती है। प्रेमचंद गाँव को रोमांटिक नहीं बनाते, वे उसके दुख को उजागर करते हैं। इसीलिए उनकी ग्रामीण कहानियाँ सामाजिक अध्ययन की तरह भी पढ़ी जा सकती हैं।

किसान और गरीबी

प्रेमचंद की कहानियों में किसान जीवन का संघर्ष बार-बार आता है। उनके यहाँ किसान केवल श्रम का प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा भोगी है। वह मेहनत करता है, फिर भी भूखा रहता है, वह उत्पादन करता है, फिर भी ऋण से मुक्त नहीं हो पाता। किसान की यह त्रासदी प्रेमचंद के लेखन में बहुत गहराई से उभरती है। “पूस की रात” में हल्कू का ठंड से कांपना, “कफन” में घीसू-माधव जैसी निम्नवर्गीय जीवन-स्थितियाँ, और “सद्गति” में भूख से उपजे नैतिक विघटन, सब मिलकर गरीबी की अमानवीयता को प्रकट करते हैं। “गोदान” जिसे कृषक जीवन का महाकाव्य कहा जाता है इस उपन्यास में किसान के जीवन की करुण गाथा व उससे जुड़े यथार्थ का कलात्मक व सूक्ष्म चित्रण किया गया है। समाज की चरमराहट इस उपन्यास में सर्वोत्कृष्ट माध्यम से दिखाई गई है। यह रचना गाय से प्रेम करने वाले भारतीय किसान जो न जाने कितने कष्ट को सहन करते हुए एक गाय की अभिलाशा को पूर्ण नहीं कर पाता है और अंत में कर्मकांडियों के द्वारा धर्म के नाम पर धनिया से गौ दान करने को कहा जाता है वह कहती है – “महाराज, घर में न गाय है न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गो – दान है।” यह दृश्य अत्यंत मार्मिक लगता है। प्रेमचंद गरीबी को केवल आर्थिक समस्या नहीं मानते, वे उसे सामाजिक और नैतिक संकट के रूप में देखते हैं। जब जीवन ही संघर्ष बन जाता, तब मनुष्य के भीतर संवेदनाएँ कैसे बचें, यह प्रश्न उनकी कहानियों में उठता रहता है। इस दृष्टि से प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय ग्रामीण यथार्थ का एक अत्यंत विश्वसनीय दस्तावेज हैं। जैसे गोदान में जब गरीब किसान अपनी आवाज उठाते हैं तो दबा दिया जाता है – “ऐसा एक आदमी भी नहीं, जिसकी रोनी सूरत न हो, मानो उनके प्राणों की जगह वेदना ही बैठी उन्हें कठपुतलियों की तरह नचा रही हो। चलते-फिरते थे, काम करते थे, पिसते थे, घुटते थे, इसलिए कि पिसना और घुटना उनकी तकदीर में लिखा था...” इन पंक्तियों में कृषकों की दयनीयता और लाचारी को प्रदर्शित किया गया है।

जाति और अस्पृश्यता

प्रेमचंद की कहानियों में जातिगत भेदभाव की आलोचना बहुत तीखी है। वे जानते थे कि जाति-व्यवस्था, छुआछुत, अन्याय

केवल सामाजिक पदानुक्रम नहीं, बल्कि मानव-गरिमा पर चोट है। “सद्गति” इस विषय की अत्यंत मार्मिक कहानी है। इसमें एक अछूत व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी जाति-भेद का क्रूर रूप सामने आता है। उधर दुखी की लाश को खेत में गीदड़ और गिद्ध कुत्तों और कोए नोच रहे थे। यही जीवन-पर्यन्त की भक्ति, सेवा और निश्ठा का पुरस्कार था। – सद्गति, प्रेमचंद। कहानी यह दिखाती है कि समाज कैसे मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता, बल्कि उसकी जाति के आधार पर उसका मूल्य तय करता है। पंडित जी के द्वारा बोले गए इन भावों से दिखाई पड़ती है – “कुछ भूसी-चोकर हो तो आटे में मिलाकर दो-ठो लिट्ठी ठोंक दो। साले का पेट भर जायेगा। पतली रोटियों से इन नीचों का पेट नहीं भरता। इन्हें तो जुआर का लिट्ठा चाहिए...।” – सद्गति, प्रेमचंद। प्रेमचंद की खास बात यह है कि वे उपदेश नहीं देते, बल्कि स्थिति को ऐसे प्रस्तुत करते हैं कि जातिगत अमानवीयता स्वयं उजागर हो जाए। यह कहानी संवेदना जगाती है, पर साथ ही व्यवस्था पर प्रश्न भी खड़े करती है। जाति के संदर्भ में प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक बराबरी की माँग करता है। “सवा सेर गेहूँ” में गरीब किसान के भोशण को दिखाया गया है जो साहूकार और पुरोहितों के द्वारा तत्कालीन समाज में की जाती है उस समय के बंधुवा मजदूरों की कहानियाँ बताती हैं जो कैसे एक छोटे से कर्ज के कारण जीवनभर के लिए गुलामी के जंजीरों में कैद हो जाते हैं – “शंकर ने कुछ देर तक गहरे सोच में पड़े रहने के बाद कहा, “महाराज! ये तो जन्म भर की गुलामी हुई?” पण्डित, “गुलामी समझो, चाहे मजूरी समझो। मैं अपने रुपये भराए बिना तुम्हें न छोड़ूँगा। तुम भागोगे तो तुम्हारा लड़का। हाँ जब कोई न रहेगा, तब की बात दूसरी है।” इस फैसले की कहीं अपील न थी। मजदूर की जमानत कौन करता? कहीं पनाह न थी? भाग कर कहाँ जाता? दूसरे रोज से उसने पण्डित जी के हाँ काम करना शुरू कर दिया। सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र भर के लिए गुलामी की बेड़ियाँ पाँव में डालनी पड़ी। उस बद-नसीब को अब अगर किसी खयाल से तस्कीन होती थी तो इसी से कि ये सब मेरे पिछले जन्म का भोग है।” इन पंक्तियों से समझ आता है कि आखिर कब तक जाति-आधारित अपमान व घुटन समाज में गरीबों को सहन करना होगा, प्रेमचंद लिखते हैं कि गरीबों के साथ लिए बगैर समाज का विकास अधूरा ही रहेगा।

स्त्री जीवन की सच्चाई

प्रेमचंद की कहानियों में नारी-जीवन का यथार्थ अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उपस्थित है। वे स्त्री को केवल करुणा की वस्तु मात्र के रूप में नहीं दर्शाते, बल्कि उसे सामाजिक संरचना की पीड़ित इकाई के रूप में दिखाते हैं। उनकी कई कहानियों में स्त्री शिक्षा, विवाह, विधवा-जीवन, आर्थिक निर्भरता, घरेलू शोषण और सामाजिक नियंत्रण वृद्ध स्त्री पात्र का दोहरा भोशण जैसे मुद्दे उभरते हैं। ‘बेटो वाली विधवा’ अत्यंत मार्मिक कहानी है, जिसमें फूलमती नामक वृद्धा जो विधवा है मुख्य पात्र है इसमें दिखाया गया है कि माता-पिता जीवन भर अपने बच्चों के लिए त्याग करते हैं परंतु वृद्धावस्था में वहीं बेटे केवल उनकी सम्पत्ति और धन चाहते हैं। प्रेमचंद ने बार-बार दिखाया कि स्त्री का संघर्ष केवल घर के भीतर नहीं, बल्कि पूरे समाज के भीतर चलता है। “बड़े घर की बेटा” जैसी कहानियाँ स्त्री के संयम और समझदारी को रेखांकित करती हैं, जबकि अन्य कहानियाँ यह दिखाती हैं कि समाज स्त्री को सम्मान कम और नियम अधिक देता है। प्रेमचंद की स्त्रियाँ कभी निष्क्रिय नहीं होतीं, वे परिस्थितियों से जूझती हैं। यही कारण है कि उनका स्त्री-चित्रण आज भी जीवंत और विश्वसनीय लगता है। “पुरुष में थोड़ी-सी पशुता होती है, जिसे वह इरादा करके भी हटा नहीं सकता। वहीं पशुता उसे पुरुष बनाती है। विकास के कम में वह स्त्री से पीछे

है। जिस दिन वह पूर्ण विकास को पहुँचेगा, वह भी स्त्री हो जाएगा।” —स्त्री, हिन्दवी। “निर्मला” कहानी में प्रेमचंद ने, समाज की निरंकुशता पितृसत्तात्मक समाज की कुरता, संदेह के कारण पारिवारिक विघटन, दहेज प्रथा से उपजी महिलाओं के विरुद्ध होने वाली बेमेल विवाह व अत्याचार को प्रदर्शित करती है।

वृद्ध पात्रों का मार्मिक चित्रण

प्रेमचंद ने वृद्ध पात्रों में जैसे जीवन फूक दिया हो, उनकी कहानी को पढ़ने से मानो अन्तर्मन में एक आन्दोलन छिड़ जाती है कि क्या यह वहीं समाज है जो परंपरा पीढ़ी व मूल्यों की बात करते हैं परंतु वास्तविकता कुछ और ही है। इनकी बूढ़ी काकी इन्हीं में से एक दृश्य है जिसमें उनके अपमान, धुतकार की बात की है —“जिस प्रकार मेढ़क केचुए पर झपटता है, उसी प्रकार वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटक कर बोली — ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़ ? कोठरी में बैठते हुए दम घुटता था? अभी मेहमानों ने नहीं खाया.....आकर छाती पर सवार हो गई। जल जाए ऐसी जीभ।डायन न मरे न माँचा छोड़े। नाम बेचने पर लगी है। नाक कटवा कर दम लेगी।...”³ ऐसे इस कहानी में अनेक दृश्य हैं जो समाज में बुजुर्गों के अपमान व अवहेलना, केवल संपत्ति की लालसा को दिखाते हैं।

नैतिक द्वंद्व

प्रेमचंद की कहानियों का एक महत्वपूर्ण पक्ष नैतिक द्वंद्व है। उनके पात्र अक्सर सही और गलत के बीच नहीं, बल्कि मजबूरी और आदर्श के बीच फँसे दिखाई देते हैं। ‘कफन’ इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण कहानी है। घीसू और माधव का व्यवहार पाठक को असहज करता है, लेकिन उनके जीवन की भूख और निरंतर अपमान की स्थिति को जाने बिना उन्हें पूरी तरह समझ पाना संभव नहीं है। घीसू व माधव का यह संवाद बताता है कि — “और क्या रखा रहता है ? यहीं पांच रुपए पहले मिलते, तो कुछ दवा — दारू कर लेते।”..... “कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफन चाहिए।” प्रेमचंद यह दिखाते हैं कि नैतिक पतन कभी-कभी व्यक्ति की स्वार्थी प्रवृत्ति से नहीं, बल्कि सामाजिक क्रूरता से जन्म लेता है। माधव जब दहाड़े मार- मारकर रोता है तब घीसू कहता है — “ क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह माया — जाल से मुक्त हो गई, जंजाल से छुट गई। बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्द माया — मोह के बंधन तोड़ दिए।” नैतिक द्वन्द्व इस कहानी में प्रभावशाली है क्योंकि वे मनुष्य के भीतर मौजूद जटिलताओं को पहचानती हैं। वे सरल नैतिक निर्णय नहीं देती, बल्कि जीवन की पेचीदगियों को उजागर करती हैं।

समाज और सत्ता

प्रेमचंद की कहानियों में सत्ता का चेहरा अक्सर कठोर और असमान है। चाहे वह जमींदार हो, साहूकार हो, अफसर हो या सामाजिक प्रतिष्ठा की व्यवस्था, हर जगह कमजोर के ऊपर दबाव दिखाई देता है। वे यह दिखाते हैं कि सत्ता केवल शासन में नहीं, बल्कि घर, जाति, आर्थिक संरचना और सामाजिक नियमों में भी मौजूद होती है। प्रेमचंद के पात्र बार-बार इस सत्ता से टकराते हैं और हारते भी हैं, लेकिन उनकी हार ही समाज की सच्चाई बन जाती है। “गोदान” में होरी का पुत्र गोबर विद्रोही भावना का प्रतिनिधित्व करता है उसके विचार साहुकारों व जमींदारों के विरोध में दिखता है जैसे—“यह सब मन को समझाने की बातें हैं। भगवान सबको बराबर बनाते हैं। यहाँ जिसके हाथ में लाठी है, वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।” इसी कारण उनकी कहानियाँ सत्ता-विमर्श की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। उनके यहाँ समाज एक स्थिर इकाई नहीं, बल्कि संघर्षों का जीवंत मंच है। ठाकुरों का कुआँ के माध्यम से लेखक

ने ग्रामीण समाज के उस घृणित रूप पर प्रहार किया है जहाँ छोटी जाति के लोगों मूलभूत मानवीय अधिकारों से वंचित किया जाता है। “जोखू कई दिनों से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला — अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लू।” सामांतवाद और पुंजीवाद के कारण ही पानी नहीं मिला और कुएं में मरे हुए जानवर के बदबुदार पानी पीने से जोखू की मृत्यु होती है यह कहानी गरीबी व अन्याय पर तीखा प्रहार करती रचना है जो समाज की विभीषिका को दिखाती है। हिन्दू समाज में विवाह प्रथा के दोहरे मापदण्ड, जो पुरुष और महिला के लिए अलग है प्रेमचंद उनमें परिवर्तन लाना चाहते हैं वे लिखते हैं —“जब युवक वृद्धा के साथ प्रसन्न नहीं रह सकता, तो युवती क्यों किसी वृद्ध के साथ प्रसन्न रहने लगी ?”— निर्मला। प्रेमचंद का सुझाव है कि — कन्याएं स्वयं अपना भाग्य अपने हाथ में लें और विवाह के बंधन में उस समय तक न पड़े, जब तक कोई ऐसा वर न मिले, जो प्रेम-भाव से उनके सामने सिर झुकाए। जब कन्याओं में इस आत्मबल का उदय होगा, तभी इस जाति का उद्धार होगा।” प्रेमचंद।⁸

भाषा और शैली

प्रेमचंद की भाषा आमजन की भाषा है। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ आम पाठक को भी अपनी लगती हैं उनमें भावप्रवणता साथ ही सहज संवाद योग्य, सरल, प्रवाहपूर्ण होती है। उन्होंने कृत्रिम भाषा से दूर रहकर ऐसी शैली अपनाई जो जीवन के निकट थी। उनके कथ्य में संवेदना, दृश्यात्मकता और संवादात्मकता का संतुलन मिलता है। तबीयत तो जब बहलती, जब कुछ मिलता। जब काम ही नहीं मिलता, तो क्या करें?” — कफन। कफन एक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है जिसमें मृत व्यवस्था पर वस्त्र डालने से कोई लाभ न होने की ओर संकेत करता है। उनकी भाषा किसी सजावटी प्रभाव के लिए नहीं, बल्कि पात्र और परिस्थिति को प्रामाणिक बनाने के लिए प्रयुक्त होती है। इसी सहज भाषा ने उन्हें जनता का कथाकार बनाया।

आज की प्रासंगिकता

प्रेमचंद की कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि जिन समस्याओं को उन्होंने लिखा था, उनमें से बहुत-सी आज भी समाज में मौजूद हैं। गरीबी, जातिवाद, स्त्री-हिंसा, शोषण, आर्थिक असमानता और सामाजिक अन्याय आज भी अलग-अलग रूपों में दिखाई देते हैं। इसलिए प्रेमचंद का साहित्य केवल अतीत का साहित्य नहीं, बल्कि वर्तमान का साहित्य भी है। उनकी कहानियाँ हमें याद दिलाती हैं कि समाज की असली परीक्षा उसके कमजोर लोगों के प्रति व्यवहार से होती है। प्रेमचंद की प्रासंगिकता इस बात में है कि वे आज भी मनुष्य को मनुष्य की तरह देखने की प्रेरणा देते हैं।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय समाज के सामाजिक यथार्थ की गहरी और सच्ची अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने गाँव, किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और निम्नवर्ग के जीवन को जिस संवेदनशीलता और ईमानदारी से चित्रित किया, वह उन्हें हिंदी साहित्य में अद्वितीय बनाती है। उनकी कहानियाँ केवल बीते समय का चित्र नहीं हैं, बल्कि वर्तमान समाज के लिए भी एक आईना हैं। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में यह साबित किया है कि साहित्य की असली शक्ति सुंदर शब्दों में नहीं, बल्कि सच्चाई कहने के साहस में होती है और उनके साहित्य में यह कूट-कूटकर भरा हुआ है, समाज के सभी वर्गों की आवाज उनकी लेखनी के माध्यम से उभरी है इसलिए प्रेमचंद का

कथा—साहित्य सामाजिक चेतना, मानवीय करुणा और यथार्थबोध का अमूल्य स्रोत है।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद, 1977, हिन्दी कहानियाँ, सं. जैनेन्द्र कुमार लोकभारती प्रकाशन।
2. हिन्दी आर्गेनाइजेशन।
3. प्रेमचंद, बूढ़ी काकी, गद्य कोश/विश्व कोश, मानसरोवर भाग – 8 कहानियाँ
4. प्रेमचंद, मुंशी, मानसरोवर सभी भाग।
5. शर्मा, रामविलास, प्रेमचंद और भारतीय समाज
6. सिंह, नामवर, कहानी नई कहानी
7. प्रेमचंद मुंशी, गोदान, मंजूल पब्लिसिंग हाउस प्रा. लि. भोपाल, पृ 366,25
8. प्रेमचंद, निर्मला।
9. शुक्ल, रामचंद्र, (2018), हिंदी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।